दृष्टि

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में वीरगाथाओं का युग राजनीतिक दृष्टि से पतनोन्मुख, सामाजिक ~~दृष्टि~~ रूप से दीन-हीन तथा ~~धार्मिक~~ धार्मिक दृष्टि से क्षीणकाल है। इस काल में जहां एक ओर जैन, नाथ और सिद्ध साहित्य का निर्माण हुआ वहीं दूसरी ओर राजस्थान में चारण कवियों द्वारा चरितकाव्य भी रचे गये। इसकाल में वीरगाथा प्रधान विषय है। अतः इन्हें वीरगाथा काव्य भी कहते हैं।

आदिकाल तीरों की सनसनाहट, तलवारों की झनझनाहट एवं वीरों की वीरता का समय है। इस काल में राजाश्रय, धर्माश्रय एवं लोकाश्रय में काव्य सृजन हुई। आचार्य रामचन्द्रशुक्ल आदिकाल का समय 1050 विक्रम सम्वत मानते हैं वहीं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी इसकाल का समय दसवीं शताब्दी मानते हैं। डॉ० रामकुमार वर्मा आदिकाल को चारण काल की संज्ञा दी है साथ ही डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त इस काल को आरंभिक काल कह कर सुशोभित किये हैं। इस काल की विभिन्न विशेषता हैं जो निम्न रूप से अवलोकित किया जा सकता है—

(1) आश्रय दाता की प्रशंसा एवं राष्ट्रीय भावना का अभाव —
(2) संदिग्ध रचनाओं का प्राचुर्य —
(3) ऐतिहासिकता का अभाव —
(4) भावान्वेष की प्रधानता —
(5) युद्धों का यथार्थ वर्णन —
(6) वीर और शृंगार रस
(7) प्रकृति चित्रण
(8) रासो ग्रन्थ
(9) काव्य के दो रूप —
(10) जनजीवन से सम्बन्धित
(11) छन्दों का विविध प्रयोग
(12) डिंगल-पिंगल भाषाएँ —

Scanned with CamScanner

काल विभाजन का लक्ष्य - अध्ययन की वैज्ञानिक सुव्यवस्था काल विभाजन का प्रधान लक्ष्य है। काल अखण्ड एवं निरवधि है। भिन्न-भिन्न कालों की भिन्न-भिन्न परिस्थितियों के व्यापक सन्दर्भों में प्रणीत साहित्य की अन्तर्निहित चेतना के विकास, उसकी प्रवृत्तियों एवं परम्पराओं के विकास तथा ह्रास एवं दिशा परिवर्तन की कहानी को सकारण स्पष्ट करना काल विभाजन का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए। अगर कोई काल विभाजन उक्त लक्ष्य की पूर्ति नहीं करती है तो उसे असंगत एवं भ्रांत समझना चाहिए।

काल विभाजन के विविध आधार - हिन्दी साहित्य के काल विभाजन कर्ता, कृति एवं पद्धति साम्य ही विभाजन की दृष्टि से कर लिया जाता है।

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner